श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ वैद्यजीवन ॥

दोहा ॥ द्विरदवदन मंगलसदन विघ्नहरण शिरताज ॥ कृपाकरण औ बुधिकरण नमोनमो गणराज १ ॥ अथ छप्पय ॥ तिलक भाल वनमाल अधिक राजत रसाल छवि। मोरमुकुट की लटक चटक वरणत अटकत कवि ॥ पीताम्बर फहरात मधुर मुसकात कपोलन । रच्यो रुचिर मुखपान तान गावत मृदुबोलन ॥ रति कोटिकाम अभिराम अति दुष्टनिकंदन गिरिधरन । आनंदकंद व्रजचंद प्रभु सुजयजयजय अशरणशरन २ ॥ सोरठा ॥ गिरिजारमण कृपाल विघ्नहरण दूषण दरण ॥ मोपर होहु दयाल होहि ग्रंथ भाषा सरल ३ रुजनाशक रविदेव तिमिरहरण संशयशमन ॥ नमो चरण तव देव होइग्रंथ पूरण सुभग ४ ॥ दोहा ॥ तापर मैं भाषाकरौं दुर्जन बहु जग माहिं॥ दस्यु कि भयते धनीजन धन नहिं अंत धराहिं ५ रोग नाशिके ग्रन्थबहु चर्कआदि बहुजोइ ॥ तिन को सार निकासिकै कीन्ह प्रकाशन सोइ ६ निजमुग्धा ते ग्रंथ गति वर्णन कीन्ह बनाइ ॥ ताते सम्बोधन कियो उपमा ताकी गाइ ७ बड़ा गूढ़ यह ग्रंथहै जीवनवैद्यक नाम ॥ कछु कल्पितमति ना करी कविलोलिम्बसुनाम ८ नहिंजानत रसरीति गति नहिं ललनाकी युक्ति ॥ ते प्रयास किमि जानिहैं चक्षुहीन ज्यों नृत्ति ९ वैद्यशास्त्रके

ग्रन्थ जे पढ़े गुरूसे होय ॥ कर जाके अमृत स्रवै कृपा विचक्षण सोय १० ॥ सोरठा ॥ निरलोभी जनसोइ धैर्य्यवान सुकृपाल बड़ ॥ ऐसो भिषक जो होइ ताकी औषधि कीजिये ११ ॥ दोहा ॥ प्रथम रोगके चिह्न लखि फेरि निदान मिलाय ॥ साध्य असाध्य बिचारिकै औषधिकरै बनाय १२ ॥ सोरठा ॥ मूढ़वैद्य जो होय औषधि कबहुँ न खाइये ॥ बुधजन जानै सोय रोगनाश चाहै जो नर १३ ॥ दोहा ॥ पथ रोगीको जो बनै ताको औषधि तौन ॥ नहिं जो ताको पथ बनै ताहि औषधी कौन १४ यह वैद्यकमें प्रथम श्रम फिरि पाछे शुभ होइ ॥ नवबाला के संग ज्यों प्रथम कष्ट सुख होइ १५ ॥ सोरठा ॥ बुधि भरोस मोहिं नाहिं रामनाम अवलम्ब बड़ ॥ सुमिरत विघ्न नशाहिं ते वशस्वामी इष्ट हैं १६ ॥ दोहा ॥ नहिं कविताई मैं करी नहिं पदलिख्यों बिचारि ॥ सुजन वैद्य जो होइँ कोउ याको लेइँ सुधारि १७ सब रोगन में ज्वर बड़ो श्रेष्ठ बली सरदार ॥ तातेप्रथमहिं कहतहौं कछु ज्वरके उपचार १८ तन्वंगी सो प्रथम दिन ज्वरमें लंघन सोइ ॥ त्यहि पाछे औषधि करै मुनिजन भाष्यो जोइ १९ देवदारु किरवार पुनि दोइ कटाई लेइ ॥ नागर फिरि धनियां कही पाचन करिकै देइ २० ॥ अथ वातज्वरकाथ ॥ अमृता गुनि औषधिकही मुस्ता तामेंडारु ॥ धवा डारिकै क्काथदे वात ज्वरका टारु २१ ॥ अथ पित्तज्वरकाथ ॥ वासा औ किरवार पुनि तिक्ता तामें होइ ॥ परपट औ मोथा सहित पित्तज्वरको देइ २२ ॥ अथ कफज्वरकाथ ॥ चौपाई ॥ शुंठी पुनि वासालै आवै। धवमुस्ताकै क्काथ बनावै ॥ मृगपति द्विरद

बिदारै जैसे। कफज्वरको मारै यह तैसे २३ ॥ सोरठा ॥ अमृता विश्वाहोइ कृष्णातामें डारिकै ॥ क्वाथ जो करिकै देइ पवनज्वर तुरतै हरै २४ ॥ चौपाई ॥ लै उशीर पित्थौन मँगावै। सोंठि किरातक मोथालावै ॥ श्रवन कटाई दूनों होइ। गुरुच गूखुरू समकरि सोइ ॥ काढ़ा करिकै तुरत पियावै। वातज्वरको बेगि नशावै २५ कमलनयनि सो चित धरि राखो। यह काढ़ा तुमते जो भाखो ॥ अमृता परपट मोथा आनु। औ चिरायता विश्वाजानु ॥ पित्त पौनज्वर दूरिपराइ। पंचभद्र काढ़ा इहु आइ २६॥ दोहा ॥ कस्तूरीको तिलक यह तेरे वदन सोहाय ॥ सिंहोदरि मृगनयनि कछु सुनहुवचन ममआय २७ अतरिजु नाहीं पिकबयनि धरहु वचन जियमोर ॥ पाय पापराक्वाथ ते पित्तज्वर अतिजोर २८ एकै परपट पित्तज्वर नाशनको यहआइ ॥ चन्दन मोथा सोंठिसँग जो कदाचिकै जाइ २९ पित्तज्वरको जारिकै सुनु ललने चितलाय ॥ महाकांति दिन दिन बढ़ै मुनिजन दियो बताय ३० देखो रेवाको पुलिन सुन्दर विशद सोहाय ॥ मनो मनोभवसों कहत रतिकी कथा बुझाय ३१ ॥ सोरठा ॥ मानत ज्यों रसखानि सुन्दरहार अमोलयुत ॥ बेली कुसुमित जानि वन उपवन सबदेखियत ३२ ॥ दोहा ॥ शीतल वायू मन्द अति देखे परम अनूप ॥ मनसिज बेगि जगाइयत मनहु ऐन ऋतुभूप ३३ ॥ चौपाई ॥ अनिल तासु अरु मोथाआनु। कुटकी अभया तहां लो जानु ॥ पित्तपापरा द्राक्षा ठानो। काढ़ा करो बात यह मानो ॥ मूर्च्छा दाह पिपासानाशै। चित्तभ्रम मुख सूख बिनाशै ॥ पित्तज्वर अति

दूरि पराई । कमलनयनि सो कह्यो बनाई ३४ कुटकी और जवासा आनु । लै प्रियंगु वासायुत जानु ॥ पदमक और पापरा लेहु । काढ़ो कै आतुरको देहु ॥ खंडकेर प्रक्षेप कराइ । तृषा दाह पित्तज्वर जाइ ३५ ॥ दोहा ॥ धात्री अमृता पापरा क्काथ पित्तज्वर जाइ ॥ पाराशरमुनि यों कह्यो तोसों कहौं बुझाइ ३६ ॥ चौपाई ॥ लोहित चन्दन पदमक होइ । धनियां गुरुच नींब तहँसोइ ॥ क्काथबनाय देव यह सुनहू । याके गुण मनमें सब गुनहू ॥ पित्तकफज्वर दाह पिपासा । वमन दूरि करि क्षुधा प्रकासा ३७ ॥ दोहा ॥ हिरीबेर मुस्ता सहित पित्तपापरा जानि ॥ चंदन अँवरा सोंठि लै शीत क्काथरस खानि ३८ दाह पिपासा ज्वरसहित सपदि छूटि कै सोइ ॥ कान्ति देह दिन दिन बढ़ै महासुखी नर होइ ३९ ॥ चौपाई ॥ गोनवनीतल्याइ कै कोई । एकसौ सहसबारकै धोई ॥ दाह शोक दुर्बलताजाइ । ज्वरआदिक सब दूर पराइ ॥ रोग अनेकनहीं ठहराइ । मर्दन अंगमें करै बनाइ ४० ॥ दोहा ॥ परतरुणी में मन दिये निज तरुणी न सोहाइ ॥ तिमि यहिके सेवन किये सकल व्यथा टरिजाइ ४१ ॥ चौपाई ॥ बाल बरेरा विड्वालेहु । कमल उशीर पापरा देहु ॥ मोथायुत षट कहेउ बिचारि । क्काथशीत यह लेव सुधारि ॥ तृष्णा दाह दूरि ज्वर होइ । पित्त विकार जात सब खोइ ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ कुसुम सुगंधित आदिदै कमल अमलमृच वात ॥ नीर केरि रस कौतुकै पित्त शांत ह्वै जात ४३ चंदन औ घृतसारयुत कमलसुगंधित माल ॥ मुक्तावलि हियरे धरै और सुगंधित माल ४४ मुग्धावचन पियूष

सम सब शृंगार बनाइ ॥ रमण केलि आलिंगकै पित्तदाह न रहाइ ४५ हाव भाव कै कामिनी वचन कहै आधीन ॥ सरस परस कै मोहयति पटपहिरै अतिझीन ४६॥ सोरठा ॥ सुंदर अतिपरयङ्क शय्या पयके फेन सम॥ विशद सुमनहु मयंक ऐसे वसन सुगंधयुत ४७ ॥ दोहा ॥ कीर कोकिला सारिका इनको सरस सो वाद ॥ बीन सितार मृदंग ये आवत सुंदरनाद ४८ ॥ सोरठा ॥ इन्दुमुखी मृगनयनि ऐसि नवोढ़ा आइकै ॥ करइदृगनिकी सयनि वचन सुधाकहि हियलगै ४९ ॥ दोहा ॥ सो व्यजना करसोंकरै वचन विचित्र बखानि ॥ पित्त उपद्रव सकल जे नाश वेग ही जानि ५० दाह तृषा अरु मोह युत शमन क्षिप्रही होइ ॥ हंसगवनि सो जानिये नहिंरारुयो कछुगोइ ५१ चंद्रमुखी आलसयुते मधुराधर मुसकानि ॥ कटिनितम्ब को भारशुभ सुनहु वचन रसखानि ५२ चंदनश्वेतकपूर लै हाहूबेर मिलाय ॥ लेप किये ते तुरतही दाह सकल मिटिजाय ५३ जो निम्बाके पातको फेन लगावै कोइ ॥ जैसे धनिन को धन हरै वेश्या जगमेंसोइ ५४ ॥ चौपाई ॥ वरण अकाश वसन तन भ्राजै। उडुगणपति सम आनन राजै॥ चंदन लेप करै मृगनयनी। दाह श्वास ते पावै चैनी ५५ ॥ पुनः ॥ पित्तज्वरमें नहिं कछु साजू। क्वाथफांटरस को नहिंकाजू ॥ अमृतादिक कहँ खोजन जाई। सुनिबोले ये वचन सोहाई ॥ मुग्धा अधरन सेवन करै। लोलिम्बराज सदा जियधरै५६॥पुनः॥प्राणप्रिये सुनिये ये बैना। पित्तज्वरमें और करैना ॥ नाना औषधि नहिं कछु करै। होइविलम्बितफलकासरै ॥ कटुकमिष्ट लागतनहिंनीको।

खाये वदनहोइ अतिफीको ॥ वैद्यराज सो कहो बुझाई । जाते पित्त शान्ति ह्वैजाई ५७ ॥ दोहा ॥ मुग्धा सुख सेवन करै शीघ्र पित्तज्वरजाइ ॥ क्षुधा अधिक कांता अधर सुनु बाले चितलाइ ५८ ॥ चौपाई ॥ धनियां सलिल भेद कै धरै । प्रात समय जो यहिविधि करै ॥ सिताडारिकै पीवै कोइ । अंतरदाह नाश सब होइ ५९ ॥ पुनः ॥ पंचमूल अमृता को लेइ । मोथा सोंठि चिरायता देइ ॥ काढ़ा याको लेउबनाइ । वात पित्तज्वर देइ भगाइ ६० ॥ पुनः ॥ शृंगीकरण कैफरा लेउ । पुहकरमूल तहां सो देउ ॥ यह अवलेह सहत सों चाटै । श्वास कास ज्वर कफका काटै ६१ ॥ पुनः ॥ लेहु भरंगी गुरुचसोहाई । देवदारु सिंघी यहिभाई ॥ कणा सोंठिसो डारैमोथा । पुहकरमूलसहित यह क्वाथा ॥ नाशै ज्वर अरु श्वास बिलाइ । बढ़ै भूख अरुरुचि अधिकाइ ६२ ॥ पुनः ॥ प्राणपतेयकसंभ्रमहोइ । तिक्त क्वाथ मुखतिक्त हरोइ ॥ है बाले सो कहों बुझाइ । वचन मोर सुनिये चितलाइं ॥ ज्योंनौढ़ा कुंचपीठिनजोइ । बढ़ैमार त्रिय आनँदहोइ ६३ ॥ पुनः ॥ कटुफल कुटकी धनियां लेउ । मोथा शृंगी बच तहँ देउ ॥ पित्तपापरा अभया सोइ । लेहुभरंगी विश्वाजोइ ॥ देवदारुयुतक्वाथ बनावै । रमठामधु प्रक्षेप करावै ॥ ज्वर श्लेष्मा कोप नशाइ । कास श्वास मुखशोष बिलाइ ॥ कोमल कंठ पीर सबजाय । तव रुचि देखि कहा मैं गाय ६४ ॥ अथ अरुचिउपाय ॥ दोहा ॥ गजगामिनी गनौ कहा वद कविन्द द्विजराज ॥ आजिम सैंधव लवँग फल अरुचि नाश को साज ६५ ॥ पुनः ॥ कमल कि केसर आनिकै घी अरु

सैंधव डारि ॥ चाटु बिजौराके सुरस देइ अरुचि सबटा-
रि ६६ खंजन दृगगंजनकरैं तव दृग परम अनूप ॥ कहौं
चिकित्सा और कछु निजमतिके अनुरूप६७॥पुनः॥चौपाई॥
सुंदर तनु सुनिये चितलाइ। अरुचि उपाय कहौं फिरि
गाइ ॥ सिंधुजवल्लिज चूरणकरै। मातुलुंगफल में लैभरै॥
चल कफ अरुचि दोष सब नाशै। परमक्षुधाको करै प्र-
काशै ॥ कंपित जो खंजन दृगसोहै। तो दृगगंजन के मन
मोहै ६८ ॥ दोहा ॥ पंचकोल को क्वाथ करि सुन बाले
चितलाइ ॥ गुलमशूल अरु आफरो अरुचि मूलसोंजाइ
६९ ॥ अथ सन्निपातक्वाथ ॥ तोटकछन्द ॥ ग्रंथि सुरदारु सो गूगुल
लेइ । शृंगी त्रिकुटा पुनि चित्रक देइ ॥ सुरईशके जो
भरंगतहां। पुहकरमूल विडंग कहां ॥ अभया औ रास-
नि येउ कहेउ। पाढ़ाबच चाब सोतेउ लहेउ ॥ जटामांसी
जवाइनि सो कह्यो। सिंहिव्रताककैरात गह्यो ॥ कुंभीयुत
क्वाथकरै मृदुबैनी । गुण याके बखानि कहौं गुणऐनी ॥
तेरहौं सँनिपात सो जीति करै । चितभ्रम सेंदुको धूरि
धरै ॥ सब वातव्यथा अधमान जरै। कफशूल अरोचक
दाह हरै ॥ शीतांग व्यथा बद जाइ टरी । दुरिजाय सो
सूतिका रोगजरी ॥ यहक्वाथ बिचारि मुनीश कहै। सब
संतनको मत बेगि गहै ७० ॥ भुजंगप्रयातछन्द ॥ अर्कमूलै
अनंता किराती कह्यो। अर्णदंती वचा सो तहां लैधर्यो॥
रुणौ भृंगराजै बतायो तहां । रसना गुंडिका शीघ्र येऊ
कहां ॥ पंच लवणै युतै क्वाथ याको करो। सन्निनाशै सबै
सत्य जानो नरो ॥ सूतिका वातरोगै हरै वेगही । दन्त
बद्धै मिटै बात सांची कही ७१॥ तोमरछन्द ॥ कटुकी कि-

रातो होइ । पीयूष पर्पट सोइ ॥ रासन शटीको आनि । श्यामा औ पुहकरिमानि ॥ त्रैमानि सिंहीफेरि । विश्वाशि-वा धव हेरि ॥ सुरदारु भृंगी एव । यह क्काथ करिकै देव ॥ त्रैदोष मूल सुनाश । मुखशोष तृट औ काश ॥ धीगुप्त निशि जागर्ण । सदाह ये रुज हर्ण ॥ सो कह्यो मैं अब तोहिं । सब देखि ग्रंथन मोहिं ७२ ॥ दोहा ॥ सन्निपात अरु काल से भेद कछू नहिं होइ ॥ महाप्रतापी भिषक सो दूरि करै तेहि सोइ ७३ सन्निपात अजगर ग्रस्यो मोचै वैद्य सुराट ॥ आत्मदान वहि दीजिये धन्य रजत कह हाट ७४ सन्निपात अरणों परे जे निकारि नर लेइँ ॥ कोविदनन्दन बरणिये किं किं ताहि न देइ ७५ ॥ अथ कर्णमूलउपाय ॥ चौपाई ॥ शांति त्रिदोषज्वर जबहोइ । श्रवण मूल महँ शोथ सो कोइ ॥ लाय जलौकासृक निक-साइ । घृत पियाउ बुध शोथ बिलाइ ७६ ॥ अथ लेपः ॥ रास्ना अरनी सोंठिको आनै । रजनीदारु चीतकोजानै ॥ लुंगजटा युत लेप बनाई । कर्णमूल महँ देइलगाई ॥ शोथ व्यथा ध्वंसन सबहोइ । हेअरविन्दनयनि यहिसोइ ॥ ७७ ॥ अथ जीर्णज्वरउपाय ॥ चौपाई ॥ पंचमूलको क्काथजोपीवै । जीर्णज्वर छूटै नरजीवै ॥ श्वासकास शिरशूलको हरै । यह उपाय निश्चयकै करै ७८ ॥ छप्पय ॥ पीपरि गुड़में सानि धरै नर बुद्धिविचक्षन । नेमसहित नितखाय जाय तजि जीरणज्वर तन ॥ अगिनि मंद कृमिजाय अरुचि को दोषनशावै । क्षुधाबढ़ै अधिकाइ श्वास अरु कास भगावै ॥ देह दूबर पीतता सकल उपद्रव जाइँहरि । यह खाय सदा जो मुदितहोइ वृद्ध रोग सब जाइँ जरि ७९ ॥

दोहा ॥ अमृताक्काथ बनाइके पीपरि चूरणडारि ॥ जीरण ज्वर कफकृतमहा देतहि जाइ सोहारि ८० ज्योंरघुपति रावण हन्यो सहसबाहु द्विजराम ॥ बुधिप्रलंब रेवतिरमण त्यों पूजैमनकाम ८१ ॥ पुनः ॥ पंचमूलको क्काथकरि श्यामा चूरणडारि ॥ जीर्णज्वर कफकृतबढ़ो आशुहिदेइ निकारि ८२ ॥ चौपाई ॥ शटीसोंठि परपटको आनै । देवदारु बृहतीयुत जानै ॥ कटुकी और जवासा होइ । लेहु किरातक मोथा सोइ ॥ क्काथ बनाय चतुरनरधरै । श्यामा मधु प्रक्षेपण करै ॥ सन्निपात जीर्णज्वर नाशै । विषम ज्वर हरितज परकाशै ८३ ॥ अथ एकाहिकज्वरउपाय ॥ चौपाई ॥ वासा नींब पटोलकोलेउ । अमिलतास त्रिफला लै सेउ ॥ द्राक्षायुत यहक्काथ बनाय। सिता औ मधु प्रक्षेप कराय ॥ जाय यकतरा ज्वर नहिं रहै । यह उपाय कहबे जोचहै ॥ ८४ ॥ दोहा ॥ गंगा उत्तर कूलमें तापस द्विजको वास ॥ ताहि अस्मरणकीजिये सुतविहीनहैतास ८५ जल अंजलितेहि दीजिये होय यकतरा नाश॥ तन्वंगी सो जानिये दिन दिन होय प्रकाश ८६ ॥ अथ तृतीयकज्वरउपाय ॥ चौपाई ॥ चन्दन धनियां सोंठि मँगावै । पीपरि हाहूबेर मिलावै ॥ मोथासहित क्काथ बनवाइ । मधुचीनी पुनिलेइ मिलाइ ॥ बेगि तृतीयकज्वरको हरै । मृगशावकलोचनि जो करै ॥ ८७ ॥ अथ चातुर्थिकज्वरउपाय ॥ चौपाई ॥ घीउ पुरान खोजि लैआवै । रमठायुत सो नास देवावै ॥ चातुर्थिकज्वर देखि पराय । तोसों प्रिया कहौं समुझाय ॥ लीलावति नवयौवन बाला । देखत साधूपति ज्यों हाला ८८ ॥ दोहा ॥ शरद रैनि राकाशशी तवमुखदेखि लजाय ॥ मुनिदुर्मद

रस नासलै चातुर्थिकहि बिलाय ८९ ॥ पुनः ॥ वासा सोंठि हरीतकी अँवरा तामेंहोइ ॥ देवदारु औ श्रवणको क्काथबनावैकोइ९० मधु औ खांड़ मिलाइकै पिये प्रात नर नित्त ॥ चातुर्थिकज्वर जारिकै सुखपावै अति चित्त ९१ ज्यों स्वामीतजिदेतहैं भृत्य क्षीण धनदेखि ॥ ऐसे निश्चय जानिये चातुर्थिकहि बिशेखि९२ ॥ अथ शीतज्वरउपाय ॥ छप्पय ॥ त्र्युषणतत्र मण्डारि करै नर पान मुदितमन । सद्यशीत ज्वर जाय कहतयह बुद्धिमान जन ॥ अथवा मदिरा सेइ जाइ सब शीततापहरि। कम्बल ओढ़नकरै शीतभवभीत जाइ टरि ॥ अगर लिप्त पीवर उरज तरुणी दृढ़ आलिंग । कामकुरंगिनिनयनि सुनु सकल शीतज्वर भंग ९३ ॥ पुनः ॥ चौपाई ॥ सुनासीर ज्यों मोथा वासा । गुरच सोंठि निरगुंडी वासा ॥ भृङ्गराज दद्रुघ्न सो ऐसो । क्षुद्रा और यवानी जैसो ॥ क्काथ बनाय जो यह नर पीवै । होइ सुखी अतिसुखसों जीवै ॥ शीतज्वर घन उकड़ो मानो । ताको प्रबल कृशानुहि जानो ९४ ॥ अथ विषमज्वरउपाय ॥ चौपाई ॥ अमृतबैनि अमृताको लेइ । विश्वअनूपे विश्वा देइ ॥ सिंहोदरि सिंहीको आनै । सघनकुचे घन तामें गानै ॥ शिवे शिवायुत क्काथ बनाय । मधु अरु श्यामा लेइ मिलाय ॥ विषमज्वर सब ढूंढ़िक नाशै । अरुचि जाय अरु क्षुधा प्रकाशै ९५ ॥ पुनः ॥ दोहा ॥ रसवनकल्प बनायकै तिल को तेलमिलाय ॥ मर्दन कीजै अंग महँ विषमज्वर टरि जाय ९६ वात व्यथा सबजाय हरि होइ अनन्दितगात ॥ ज्योंनभ में घन सघन अति दुरेसों लागत वात ९७ ॥ पुनः ॥ चौपाई ॥ क्षौद्र चेतकी नित उठिखाय । विषमज्वर दुख

जाइ सिराय ॥ वृद्धमान पीपरि करु पान । विषमज्वर को करु अपमान ॥ खाउ मजाजी गुड़में सान । विषम ज्वर हरु कह्यो निदान ॥ अथवा उग्रा गुड़में खाइ । विषमज्वरको देइ भगाइ ९८ ॥ दोहा ॥ मल्लीकुसुम सोहावने तव कबरी में जाल ॥ सिंहोदरि शुभ कान्ति युत चपल नयनि मृदुचाल९९लेहुपटोलैरोहिणी कटुकीतामें आनु॥ मौरेठी मोथा सहित क्वाथ सो यह मनु जानु १०० विषम ज्वर सब नाश करु सुनु बाले चितलाय॥होइ क्षुधा अरु रुचिबढ़े कहेउ सोतवरुचिपाय१०१॥ चौपाई॥कमलनैनि सो वचन रसाले । तव हियहार सुखद अतिहाले ॥ पइ बरदल मोथातहँ सोई । अमृतानींबसिंहिका जोई।। सुनासीर जब लीजय तैसो । काढ़ो करै कहति हैं जैसो ॥ विषमज्वर सब देखत गंजय । ज्वर के सकल उपद्रव भंजय १०२ ॥ दोहा ॥ हेम कलश सम सोहियत तव उरोज अनुरूप ॥ श्यामे श्यामा क्षौद्रयुत विषमज्वर हरण अनूप १०३ क्षण भरि चलता छोड़िकै सुनु मुग्धे मम बैन ॥ सावधान हो कहत हौं कामकुरंगिनिनैन १०४ मेघनाद को मूललै शिर में बांधैकोइ ॥ विषमज्वर सब नाश ह्वै कह्यो मुनीशन जोइ १०५ ॥ चौपाई ॥ अबले पद्म रङ्ग तन सोहै । चपलनयनि देखत मन मोहै ॥ रतन जड़ित उर हार बिराजै । काम कला बुध शुभतन साजै ॥ गुरच चेतकी मोथा आनै । क्वाथ क्षौद्र युत यह शुभजानै ॥ विषमज्वर चिर शीघ्र बिनासै । लोलनयनि शुभ आभा भासै १०६॥ अन्यच्च ॥ तीक्षणबुधिचातुर अति सोहै । देखत चालु काम जग मोहै ॥ कुष्ठानींब लेय जब

ऐसे। शरष पलाश शिवा पुनि तैसे॥ आज्य सहित यह धूप देखावै। विषमज्वर यह बेगि नशावै १०७॥ दोहा॥ तिक्का धना उशीर लै मोथा रेणो आनु॥ सहित बरेरा क्काथ दे रोगिन को हितुमानु १०८ विषमज्वरको नाशिकै सुख सों नर अतिजीय॥ आनँदमय यह जानिये जो या विधिसों पीय १०९॥ लक्ष्मीधरछन्द ॥ शारिवा तिंतिली चन्दनै आनिये। शालिपर्णी विषादास सो जानिये॥ इन्द्रयो बेल मोथा सो लीजै अबै। फूलडारे धवां बेर आनै तबै॥ मल्लिका किंजटा तिक्त लैकैधरो। पीपरी युक्त कै क्काथ याको करो॥ आज्य प्रक्षेप कै पान सोई करै। बि-षम नाशै सबै मुण्ड पीरा हरै॥ पासुरी साधि पीड़ा हरै वे-गही। छर्दि ऐसो कफानाश कै शीघ्रही॥ अच्युनाशै यथा सत्यजानौ चहौ। बाललीला रतेमंजरी सो कहौ ११०॥ अथ कर्मज्वरउपाय ॥ तोमरछन्द ॥ चलु वृक्षको करुसेव। होम जपहरदेव॥ द्विज साधु गुरुको मानु। ग्रहरिष्ट ताकोदा-नु॥ श्रीकृष्णजप भयकाट। करु सहसनामै पाट॥ मणि आदि दानजोहोइ। जसशक्ति दीजैसोइ॥ हैं आठज्वर अति जोर। ज्योंजातिहैं निशिभोर॥ यहकर्म्मरोगउपाय। सो कह्योहै मुनिराय १११॥ अथ पथ्यविचार ॥ चौपाई॥ त्रियारत-नमें सृष्टिबिराजै। अतिप्रवीणगति मत्तसोंलाजै॥ बो-लतबैन सुकंठसिहाय। देखतवदनसो इंदुलजाय॥ ज्वरी होइ अथवा ज्वर छीजै। सांझसमय भोजन लघुकीजै॥ हे बाले यह गुप्तउपाय। याते तोहिं कह्यों समुझाय ११२॥

इति श्रीक्षत्रियवंशावतंसशंकरप्रसादेनवैद्यजीवनभाषा कृतेज्वरप्रतीकारोनामप्रथमोविलासः १॥

दोहा ॥ विघ्नकदन वारणवदन सिद्धिसदन गुणऐन॥ तिनकेपद वंदनकरौं लहौं मोद चितचैन १॥ सोरठा ॥ गुरुच अतीस सो आनि मोथा और चिरायता ॥ सोंठि इंद्रयवमानि काढ़ा करिकै दीजिये २ ज्वर अतिसार नशाय यह औषधिके योगते ॥ सिंदुर कुंभ लजाय तव कुच उन्नत देखिकै ३ ॥ चौपाई ॥ चंदनश्वेत उशीर सो ऐसो। कुरी कूट पाठा पुनि तैसो ॥ कमलगरी धनियां अरु मोथा। बेलअतीस गुरचतेहिसोथा ॥ दहीबेरभुवनिंबसो आनै। औषा सहित क्काथ यह जानै॥ माक्षिक सहित पान यह कीजै। अतीसार देखत सबछीजै ४ ज्वर तृष्णा अरु दाहनशावै। श्वासछर्दिको मूलबहावै ॥ पंचमूल पाढ़ापुनि जोई। बेलसोंठि मोथा लैसोई ॥ लै उपशारनि गुरच सोहाई। इंद्रज और बरोरा ल्याई॥ कमलगटा उशीरको आनै। क्काथबनाइ करावै पानै ॥ अतीसार ज्वरमूल बिनाशै। छर्दि श्वास अरु मेटै काशै ५ ॥ दोहा॥ कफ अरु पवनकेकोपते अतीसार ज्वरहोइ ॥ दशमूलनको क्काथदे तुरतहि डारै खोइ ६ अतीसारज्वरपित्तको पंचमूलहित क्काथ ॥ पुनःपुनः पूंछतिकहा हे मृगाक्षि गुणगाथ ७॥ चौपाई॥ देवदारु अतीस को आनै। घन विडंग पाढ़ायुत जानै॥ कूटमिर्च सह क्काथ बनाय। अतीसार ज्वर साफ पराय ॥ अतीसार सागर अति जोहै। जाको कुंभज ऋषि समसोहै॥ ऐयेप्रिये सुनिये चितलाय। जो मुरारि सों प्रीतिबढ़ाय ८ बालकघन श्री ताहि न भावै। धन्य विश्वकछु मतहि न आवै ॥ अतीसार रुज जो कछुहोइ। ताकी यहउपमा करुसोइ॥बालक श्रीधनधान्यकोआनै।

विश्वयुते यह क्वाथ बखानै ९ ॥ दोहा ॥ धनियां हाहूबेर लै मोथा तहँकरु सोइ ॥ बेलगिरीयुत पानकरु अतीसार को खोइ १०॥ चौपाई ॥ इंद्रयबेल मोचरसलीजे। मोथालोध सोंठि तहँदीजे ॥ धावा कुसुमधवालैजोरैं। गुरु मिलाय कै तक्रमें घोरैं ॥ करै पान कणु आंव नशावै। अतीसार चिर बेगि बुझावै ११ ॥ दोहा ॥ कल्याणी कंचन लता ललितांगी युत मैन ॥ राजै मुख तांबूलयुत ललने कुरु दृग सैन १२ सोंठि औ धात्री कुसुमलै अजमोदा को जान॥ गादि मोच चूरणकरै तक्र मेलि कुरु पान १३ महा उग्र अतिसारको करै बिहंडन सोय ॥ याते कह्यो बिचारिकै ग्रन्थन को मत जोय १४ ॥ चौपाई ॥ एक शारिवा क्वाथ बनावै। अतीसार ज्वर बेगि नशावै ॥ षोड़शवर्ष तरुणि जो बाला। रमणकिये बलजाय सो हाला ॥ बालेअधर चरणकर सोहैं। कोमल अरुण देखि मन मोहैं ॥ मल्ली कुसुमहार सुखदेनी। तव कुचऊपर सोहतसेनी १५ कुंडल सुभग कपोलन हालै। कटितट क्षुद्रघण्टिका जालै ॥ सूक्ष्म वदन भूषण श्रमधारी। चित्रित वरण सुगन्धित सारी॥ लेहुकूट मोथायुतसोई। हिरीबेर वृष श्रीफल जोई॥ पियत क्वाथ यह आंव नशावै। रक्तमूल अतिसार मिटावै १६ ॥ तोटकछन्द ॥ धवबेलगिरी अरु सोंठधुरो। पाढ़ा पुनि अंबुअतीस खरो ॥ ह्रीवेर सो इन्द्रज आनिधरै। तितिली पुनि अर्ल जो लोधपरै ॥ फिरि आम्रकेबीजमिलाय तबै। सबचूरणकै अनुमान जबै ॥ जलतंडुलसे यहपान करै। कालीन महा अतिसार हरै ॥ यह चूरण के गुण ग्रन्थ कहै। गंगाधर नाम बखानतहै १७ ॥ दोहा ॥ कंदुक

की निन्दाकरैं तव कुच सुभग अनूप ॥ नहिं कोऊ त्रियसों दिखत तव स्वरूप अनुरूप १८ दाड़िम कटुकी क्वाथकरु सहत तहाँ पुनि डारु ॥ रक्तसहित अतिसारको देतहिदेत सो टारु १९ सिता सहत श्रीखंडयुत चाउरधोवन पीव ॥ दाह मोह तृट रक्तयुत अतीसार सो जीव २० ॥ चौपाई ॥ कुक्षि को शूल आमयुत देखै । विविध भांति अतिसार बिशेखै ॥ बेलगिरी गुरु सकल संहारै । तव उरोज लखि श्रीफल हारै ॥ सहित जवाइनि मोथा लेउ । नागरबेल उशीर धरेउ ॥ युगपरणी अतीसको आनै । बाले बरवा धनियां जानै ॥ सम औषधको धरै बनाय । धूप देइरा करै करवाय ॥ अतीसार भंजन जो चहै । यहउपायकरिकै सुख लहै २१ ॥ अथ संग्रहणीउपाय ॥ चौपाई ॥ पुनर्नवा अज-मोदा सोई । चित्रक औ सरफोंका जोई ॥ सोंठि चेतकी कोणै धरै । बेल कंज युत क्वाथ जो करै ॥ अर्शशूल संग्र-हणी नासै । बढ़ै क्षुधा शुभ आभा भासै २२ ॥ सोरठा ॥ सोंठि गुरचको आनि लै अतीस मोथा सहित ॥ करैक्वाथ मन जानि आंव बंध मेटै सकल २३ ॥ दोहा ॥ संग्रहणी को नाशिकै अग्निमन्द मिटिजाइ ॥ वैद्यन कौतूहलनको कह्यो मुनीशनगाइ २४ ॥ चौपाई ॥ सोंठि क्वाथकरिकै नर धरै । पाछे घृत प्रक्षेपणकरै ॥ पाण्डुरोग अरु आंव नशावै । संग्रहणी युत काम भगावै ॥ पाढ़ा विषा इन्द्रयव सोई । तज मोथा कटुकी तहँ जोई ॥ लेहु धातुकी रसवतु दीजै । बेल सोंठि सम चूरण कीजै ॥ चाउर जल मधु संयुत पीवै । संग्रहणी नाशै नर जीवै ॥ रक्तप्रवाह अर्शकोबासै । गुदा बंद युत पीड़ा नासै २५ ॥ चंद्रकलानिधिचूर्ण ॥ चौपाई ॥

लेहु चिरैता कटुकी जोई । मोथा इन्द्रयव लीजै सोई ॥ सोंठि मिरच पीपरि को लीजै । ये औषधैं भाग सम कीजै ॥ भाग स्वयुग चित्रक लै धरै । सोरह भाग कूटकै करै ॥ लै सबको चूरण बनवावै । गुड़ जलसों यह पान करावै ॥ पांडु अरुचि ज्वर मर्दनकरै । कोमल गुल्म मेह को हरै ॥ अतीसार संग्रहणी जाइ । चन्द्रकलानिधि चूरणआइ २६ जवाखार सज्जी पुनिलीजै । तीनिलोन त्रिकुटायुत कीजै ॥ चाब चीत अजमोदा आनै । पीपर-मूलहींग परमानै ॥ जीरा समसह चूरण सोई । तक्र स-हतयुत पीवै कोई ॥ क्षुधामन्द अरुशूल बिलाय । अरश सहित संग्रहणी जाय ॥ प्राणप्रिये यह अधिक सोहाई । मैं देखा याको अजमाई २७ ॥ छप्पय ॥ आनै युग पुनि क्षार हींग अजवाइनि लीजै । पंच लवणको डारि फेरि त्रिकुटा को दीजै ॥ सम चूरणकरि धरै पुनि यह युक्ति बनावै ॥ अमलबेत अरु लुंगबेरके रसै भिजवावै ॥ कफ वातयुक्त संग्रहणिक अर्शसहित नाशै सकल । दीपन पाचन होइ अति नयन नयन देखै सुफल २८ ॥ दोहा ॥ चित्त चाब अरु बेललै सोंठिसहित समचार ॥ तक्रस-हित सेवन करै संग्रहणी रुजजार २९ ॥ चौपाई ॥ सोंचर मिरच चित्त समधरै । कंजी सहित पान यह करै ॥ क्षु-धामन्द अरु गुल्म नशाई । प्लीह अर्श संग्रहणी जाई ॥ मोथा बेल मोचरस लीजै । हाहूबेर उशीर धरीजै ॥ इंद्र-जसह जो क्वाथबनावै । गोघृतको प्रक्षेप करावै ॥ आंव बंध संग्रहणी नाशै । रक्तधारयुत अरुचि बिनाशै ३० ॥ दोहा ॥ कृच्छ्र कठिनता जोरते दस्तहोइ अधिकार ॥

शोधो घृतको पाचदे करहि वेगही क्षार ३१ कास श्वास ज्वर पांडु युत प्लीहाजाइ बिलाय ॥ संग्रहणी गुदशूल सो देतहि जाय नशाय ३२ ॥ हरिगीती छन्द ॥ त्रिकुटास जर अरु सौंफ मुरछा श्वास अधिक बिशेषिकै। पुनि दाह हिक्का वात शूल सुवैद्य मन अनुमानिकै॥ विद्वेष पुनि अतिसार ऐसो और औषध ना करै। गोविन्द माधव कृष्ण केशव नाम जप हिय में धरै ३३ ॥

इति श्रीक्षत्रियवंशावतंसशंकरप्रसादेनवैद्यजीवनभाषाकृतेऽतीसारप्रतीकारोनामद्वितीयोविलासः ॥ २ ॥

दोहा ॥ एकरदन गजवदनको हिय में चरणमनाय ॥ पुनः चिकित्सा कछुकरौं भाषाभणित बनाय १ ॥ चौपाई ॥ कोमलबैनि सुनौ चितलाय। श्वासकास प्रतिकार उपाय ॥ दशमूलनको क्वाथ बनाय। चपलाको प्रक्षेप कराय ॥ कासखोजि को मूल बहावै। यह उपाय जातेबनि आवै ॥ मोथासोंठि चित्रकी लीजै। दूनों गुड़लै गुटिका कीजै ॥ तीनिंदिना याको जो पाय। सकल श्वास गुद जाय नशाय ॥ ज्यों ललनाको हिमऋतु माहीं। आलिंगन ते शीत नशाहीं २ ॥ अथ विभीतकअवलेह ॥ चौपाई ॥ अजामूत्र को शतपल लीजै। शतपल अक्षत्वचा को दीजै ॥ यह अवलेह सहत सों खाई। कासश्वास कफ शूल बिलाई ३ ॥ अथ आर्द्रकअवलेह ॥ चौपाई ॥ अद्रकरस पचास पल लीजै। ताहि अर्द्ध गुड़ के पलकीजै ॥ ताके अर्ध सुधनियाँ लेई। यहरुचिकै अवलेह करेई ॥ पुनि अवलेह शुद्ध जब होई। ये औषधि मिलवै लैसोई ॥ मारो लोह जवाइन आनै। तज पत्रज एलालघु जानै ॥

जीरा स्याह औ मोथा लीजे। सार्द्धसार्द्ध पल ये सबकी-
जै॥ यह अवलेह शुद्ध बनिआवै। कासश्वास ज्वरअर्श
नशावै॥ शोफ व्यथा अरु गुल्म सँहारै। पीनस कफ
पथरी को टारै॥ क्षयीरोग भंजन यह जानौ। पुनः पुनः
यह सत्य बखानौ ४॥ चिन्तामणिचूर्ण॥ दोहा॥ रास्न बरेरा
लीजिये त्रिकुटा त्रिफलासोइ॥ देवदारु पदमाष श्री चूर-
ण कीजै सोइ ५ चीत सहत सों खाइये कासश्वास मिटि
जाय॥ कफको नाशै वेगही चिंतामणि यह आय ६॥
अथ वासादिकाथ॥ चौपाई॥ वासा रजनी पीपरिलीजै। गु-
रच भरंगी मोथा दीजै॥ विश्वा सिंही क्वाथ बनाई। मि-
रचनको प्रक्षेप कराई॥ महाउग्र कफ श्वास विनाशै।
तेरी अकल सुगन्धित बासै ७॥ अथ लवंगादिवटी॥ चौपाई॥
लौंगैं मिर्च बहेड़ा आनै। ये तीनों समभाग बखानै॥ श्वे-
त खदिर सबके सम धरै। बबुर क्वाथसों गुटिका करै॥
आठ घरी में कासै चाखै। जो गुटिका मुख भीतर राखै
८॥ सोरठा॥ नीलकमलदलनयनि रतन कलित सुंदर
वपुष॥ गजगामिनि पिकबयनि सिंही क्वाथ बनायकै ९
पीपरि चूरण डारि सेवन कछुदिन कीजिये॥ सकल कास
को हारि ग्रासकरै क्षणएकमें १०॥ दोहा॥ पीपरि पीपरि-
मूललै सोंठि अक्ष ये नारि॥ क्वाथसो मधुयुत कीजिये
सकल कासको हारि ११॥ चौपाई॥ प्राणपते मो पीतम
सुनिये। मेरेबयन हृदयमहँ गुनिये॥ कासश्वास कृशता
अतिहोइ। ताकोअतिउपाय कहसोइ॥ कामकले सुनिये
चितलाय। तव दृग देखि चकोर लजाय॥ सोंठि बहेड़ा
लीजैसोइ। पीपरि पीपरिमूल जोहोइ॥ सहत सहित जो

चूरण खाइ। कासश्वास कृशता अतिजाइ १२॥ दोहा॥ करू तेल गुड़ सेइये नाश श्वास को होइ॥ पीयुष अधरे जानिये निश्चै जानोसोइ १३ तीक्ष्णचूरण कीजिये खांड़ सहतसोंखाइ॥ कासश्वास न्वितामहा नाशनको यहआइ १४॥ चौपाई॥ अक्षत्वचासुख पंकज धरिये। कासश्वास चिन्ताको हरिये॥ रावणतनय अक्ष जो होई। हनूमान मर्देउहै जोई॥ अयेप्रिये रतिदेखिलजाय। सोंठि भरंगी क्काथ बनाय॥ श्वास व्यथा सब यासों हरै। सेवन कछु दिन जो नर करै॥ त्रिकुट सर्पि गुड़ सेवन करै। कास श्वासकी बाधा हरै॥ संतत के रुज शोक बिनाशै। ज्यों हरि अपने चक्र प्रकाशै॥ शृङ्गवेर रस मधुसों चाटै। कासश्वासकी बाधा काटै॥ कृशोदरी सुनिये यह सोई। फिरि यह रुज कबहूं नहिं होई १५॥ दोहा॥ ऐता फल सम जानिये रक्त कलिन तव अंग॥ वासा क्काथ बनायकै मधु ताको करिसंग १६ यह औषधि अतिगुप्त है मैं राख्यों हियमाहिं॥ चंद्रसुखी तोसों कहौं सकल ग्रंथ निर्वाहिं १७ कासश्वास सृग पित्त गद यक्षमान सन सोउ॥ सत्य सत्य फिरि सत्यहै ऐसो ओर न कोउ १८॥ चौपाई॥ त्रिफला गुरच चीत लै लीजै। रासनि बायभरंग सो दीजै॥ त्रिकुटायुत सब सम करि धरै। सब चूरणसम मिश्रीकरै॥ क्षौद्रसहित अतिकास नशाइ। कासविनाशन चूरणआइ १९॥ हरिगीतिकाछन्द॥ सब बात दलि कफ ग्रासकै उनमील पीनस को करै। अरु दृष्टि निर्मल प्रभातनकी उदररोग सबै हरै॥ हियरोग मूल उखारिकै पुनि क्षुधा बेगि बढ़ायकै। फिरि कास

श्वास निराश ह्वैकै जाइ विषै कषायकै २० ॥ इति कासश्वास ॥
अथामवात ॥ चौपाई ॥ दशमूलन को क्काथ बनाय । रेंडी तैलको लेइ मिलाय ॥ ललने विश्वक्काथ करिधरै । पुनि रेंडी प्रक्षेपण करै ॥ कटि अरु कुक्षि वात की शूलै । आम व्यथाको मेटत मूलै ॥ औषध दोउ सत्य यह कही । लिखा देखि ग्रंथनसों सही ॥ रासनि गुर्च सोंठिको लीजै । देव-दारु दशमूलै दीजै ॥ इन्द्रजयुत यह क्काथ बनावै । पुनि रेंडीको तेल मिलावै ॥ आमवात को संचै हरै । धरि वि-श्वास जो सेवन करै २१ ॥ दोहा ॥ गुरच सोंठिके क्काथ ते आवस मोर नशाइ । ज्यों पूरुष मद मदन को त्रिया वि-लासी पाइ २२ ॥ अथ नेत्ररोग उपाय ॥ चौपाई ॥ लोलिंबराज सो कविकृत बानी । निज पत्नी सों कहत बखानी ॥ सहिं-जन पल्लव रस मधु आंजै । सकल नेत्रकी बाधा भांजै ॥ वात पित्त कफकृत उतपातै । नेत्रविकार सकल करिघा-तै ॥ चक्षु किं पीरा जाइ नशाइ । मुख्य उपाय कहा यह गाइ ॥ लोलदृष्टि मृदु कोमलबयनि । शिशुलीलायुतशुभ गुणअयनि ॥ सांझ समय यह करै उपाय । त्रिफलाघी-उसहतसों खाय ॥ विविध नेत्र को रोग नशावै । पुनः नेत्रको रोग न आवै ॥ फिरि विचार नर ऐसो धरै । निशा समय मैथुन जनि करै ॥ नेत्ररोग में अधिक सो जानै । मैथुन निंदित सुजन बखानै २३ ॥ दोहा ॥ कुवलयनयनी कामिनी सुनो नवोढ़ा बयन ॥ सिन्धुफेन अरजुन स्वरस सितासोंअंजैनयन २४ज्योंनौढ़ाकुचगहै पति करैनिवारण तीय॥रक्तबिन्दु फूली कटै औषध परम अमीय २५ श्यामे प्रिय श्यामे सुनहु श्यामाबोधितबयनि ॥ श्यामे यह जिय

राखिये सकल गुणनकी अयनि २६ सोनामाखी सहत सँग जो अंजै युगऐन॥फूलीकटि छोटी बड़ी अरु पावै नर चैन २७॥ चौपाई ॥ वनकुरथी को खोजि मँगावै। ताको डोलायंत्रबनावै॥ छगरीमूत्रपात्रमेंभरै। तामें वहडोलालै धरै॥ दैकै आंच सो लेइउतारि। सूक्षम पीसित्रिया सुख-कारि ॥ सेंधो हरदी तनकमिलावै। छपटा आंखिनमाहिं लगावै॥ नेत्ररोग सबहेरि सँहारै। विमल नेत्रकरि जगत निहारै २८ ॥ रतौंधीअंजन ॥ चौपाई ॥ कणाछष्टि गोमयरस संगै। अंजनकरत रतौंधीभंगै॥ रसते सहत्रिय संगमकरै। महाबलीकोबलज्योंहरै २९ ॥ अथ केवराउपाय ॥ चौपाई ॥ त्रि-फलावासा कटुकीलीजै। गुरचचिरैता निम्बादीजै॥ क्काथ बनाय सहत युत पीवै। केवरा पांडुनाश कै जीवै॥ देव-दालिन को फल लै आवै। ताको युक्ति सों नासदेवावै॥ कमलनयनि चिन्ता मतिकरै। केवरामल नाशकै हरै॥ गेरूहरदीअँवरालेइ। चूरणयाकोकरिकैदेइ॥ वृथानकेव-रानाशैहेरि। सत्तकरै तब आंजन केरि ३०॥ नागसरूपिणी छन्द ॥ अनंत सुरूय कुंडलै। मुखारविन्द पै हलै॥ गऊ सो क्षीर नागरं। महाहरंति कामरं॥ विचार तन्वि की-जिये। महाअनंद लीजिये ३१॥ अथ भगशूलउपाय ॥ दोहा ॥ रंडा औ पिचुमंदकी मींगी लेउ निकारि ॥ निम्बापल्लव स्वरसमें गुटिका करो बिचारि ३२ गुटिकाभगभीतरधरै योनिशूल मिटिजाय॥ सत्वर याके योगते वनिता मंगल-दाय ३३ ॥ चौपाई ॥ हे तरुणी रति उत्तर मूलै। नागर छाग सर्पि घृत तूलै॥ समतीनौं यह लेइ बनाय। योनि मध्यमहँ देइ लगाय ॥ [illegible] योनिकी शूलनिकासै।

प्रमदामन आनंद विलासै ३४ ॥ अथ क्षीरदुष्टउपाय ॥ भुजंगप्रयातछन्द ॥ शारिवा गुर्च मूर्वा स्वलीजैजबै । इन्द्रजौसोंठि मोथा चिरैता तबै । देवधूपै जोतिक्का औपाठापरै । तौलि लीजै समय क्काथ सोई करै ॥ सो दिया पानकै बान रोगै मिटै । दुष्टक्षीरै हनै अन्य बाधा कटै ॥ पुनः बोल पीवै उरोजै जही । और बाधा नहीं जायगी सो तही ३५ ॥

अथ प्रदरउपाय ॥ दोहा ॥ हरदी दारु रसौत लै मोथा बासा लेउ ॥ भिल्लावां भूनिंब तिल क्काथ सो करिकै देउ ३६ चंचललोचनि सहतयुत प्रदर मूलसोंजाय ॥ श्वेतरक्त दूनों मिटैं त्रिय आनन्दन आय ३७ ॥ चौपाई ॥ फिरि कुवलयदलनयनि उपाई । तव मुख हिमकर देखि लजाई ॥ लाजारूजर रसौत लीजै । सहत औ तंडुल जलसों पीजै ॥ तरुणी प्रदर मूलसों जाइ। सुंदरि तोसों कह्यों उपाइ ॥ सुनहु सरोरुहसोदरुलोचनि । प्रदररोग करिये तनि शोचनि ॥ चौराई रसौत को ल्यावै । मधु तंडुल जलपान करावै ॥ सकल प्रदर यासों मिटिजाय । जो बाले यह करै उपाय ३८ ॥ अथ गर्भपातन ॥ दोहा ॥ इन्द्रायनकी मूलले पीसि योनिमें लाइ ॥ मज्जनकैत्रिय जानिये रह्यो गर्भ गिरिजाइ ३९ रंडा औ व्यभिचारिणी कुलटा जगमेंकोइ॥ तिनको आनँदकरणको लिख्यो ग्रंथ में सोइ ४० ॥ अथ गर्भशूलछर्दिउपाय ॥ चौपाई ॥ धनियां मिश्री कोलैआउ । तंडुल जलसों क्काथ बनाउ ॥ गर्भिणित्रिया छर्दि को हनै । सुखसों वह बालक को जनै ॥ लुंगमूल मौरेठी लीजै । सहत घीययुत क्काथ करीजै ॥ गर्भिणि सुमुखि शूल सब जाय । चित्तभ्रम अरु छर्दि नशाय ॥